# **RAJYA SABHA**

Thursday, the 4th May, 2000/14 Vaisakha, 1922 (Saka)

The House met at elevan of the clock, MR. CHAIRMAN in the Chair.

### ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

# गुजरात के किसानों को प्रौद्योगिकी का इस्तांतरण

- \*541. श्री बचानी लेखराज: क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या सरकार ने भारतीय और विदेशी वैज्ञानिकों द्वारा कृषि में नई विकसित प्रौद्योगिकी को गुजरात के किसानों को प्रभावी रूप हस्तांतारित करने के लिए कोई कदम उठाये है ताकि अपना उत्पादन बढ़ाने के लिए उन्हें उन्नत फसल उत्पादन प्रौद्योगिकी अपनाने हेतु प्रेरित किया जा सके।
  - (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) क्या सरकार और कृषि विश्वविद्यालय किसानों को इस संबंध में प्रशिक्षण देने के लिए राज्य में फील्ड प्रदर्शनियां आयोजित कर रहे हैं;
  - (घ) यदि हां तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
- (ड.) गुजरात में खाद्यान्न का उत्पादन बढाने के लिए क्या अन्य उपाय किये जा रहे हैं?

कृषि मंत्री (श्री सुन्दर लाल पटवा) : (क) से (ड.) एक विवरण सभा-पटल पर रखा गया है।

### विवरण

(क) से (ख) जी हां। राज्य और केन्द्रीय सरकारों ने भारत तथा देश के बाहर विकिसत कृषि प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के लिए कारगर कदम उठाए हैं। इन सरकारों ने संकर प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने, महत्वपूर्ण फसलों तथा अन्य फसलों की नई किस्मों के लोकप्रिय बनाने तथा कृषि के विविधीकरण के बारे में कार्यक्रमों को तेज किया हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने नई प्रौद्योगिकियों के परीक्षण के लिए राज्य सरकार के प्रयासों की अनुपूर्ति हेतु गुजरात में 10 कृषि विज्ञान केन्द्र स्थापित किए हैं, कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियों में प्रौद्योगिकी का मूल्याकंन

और फार्म पर परीक्षण, अग्र पंक्ति प्रदर्शनों, किसानों और सेवारत कर्मियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उनका प्रसार करना शामिल हैं।

- (ग) और (घ) जी हां। कृषि विश्वविद्यालय अपने परिसर में किसान मेलों और कृषक खेत दिवसों का आयोजन करता है। वर्ष 1998-99 के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्रों ने भी निम्नांकित कार्यक्रम आयोजित किए:
  - \* ५५१ प्रशिक्षण कार्यक्रम जिनसे ११,९७३ किसानों को लाभ पहुंचा।
  - \* ५९ प्रशिक्षण कार्यक्रम जिनसे १,११७ ग्रामीण युवा लाभान्वित हुए।
  - \* प्रौद्योगिकी के अग्रणी क्षेत्रों में किसानों की जानकारी को अद्यंतन किया गया।
- \*कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा १४ रेडियो वार्ताएं, ४९ दूरदर्शन कार्यक्रम प्रसारित किए गए और समाचार पत्रों में ८८ विवरण दिए गए।
- \* तिलहनी फसलों पर 95 हैक्टर में 259 अंग्र पंक्ति प्रदर्शन और दलहनी फसलों पर 30 हैक्टर क्षेत्र में 91 प्रदर्शन किए गए।
- (ड.) अरहर और बाजरा जैसी फसलों में संकर अनुसंधान और विकास प्रयासों में तेजी लाई गई हैं। गेहूं, चावल, चना, अरहर, लोबिया, मोठ, ज्वार, बाजरा, मक्का, ऐमरंथ और गौण अनाज जैसी फसलों में जैव और अजैविक प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रति अंतर्निहित सहनशीलता के साथ कुछ उपजशील किरमों के विकास के प्रयास भी तेज किए गए है। उपयुक्त उन्नत किरमों, उपयुक्त फसल उत्पादन और संरक्षण पैकेजों को भी बेहतर बनाया जा रहा हैं।

### Technology Transfer to the Farmers of Gujarat

- $\dagger$  541. SHRI BACHANI LEKHRAJ : Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state :
- (a) whether Government have taken any steps for effective transfer of the agricultural technology, newly developed by the Indian as well as foreign scientists, to the farmers of Gujarat, so that they can be motivated to accept improved crop production technology for the enhancement of their production,
  - (b) if so, the details thereof;
- (c) whether Government and agricultural universities are arranging field exhbitions in the State for imparting training to the farmers in this regard;

<sup>†</sup>Original notice of the question was received in Hindi.

- (d) if so, the details thereof; and
- (e) the other measures being taken to increase productivity of foodgrains in Gujarat ?

THE MINISTER OF AGRICULTURE (SHRI SUNDAR LAL PATWA): (a) to (e) A statement is laid on the table of the House.

#### **STATEMENT**

- (a) and (b) Yes, Sir. State and Central governments have taken effective steps for transfer of agricultural technology developed in India and out side. The governments have, intensified programmes on promotion of hybrid technology, popularisation of new varieties of important crops and others and diversification of agriculture. The ICAR established 10 Krishi Vigyan Kendras (KVKs) in Gujarat to supplement the efforts of the state government for testing of new technologies. The activities of these KVKs include technology assessment and dissemination through on-farm testing, front-line demonstrations, vocational training of farmers and in-service personnel.
- (c) and (d) Yes, Sir. The agricultural university in the State organises Kisan melas and the farmers field days as its campuses. Also 16 Farmers' Training Centres are engaged in imparting training, besides the following activities undertaken by the KVKs during 1998-99.
  - \* 551 training programmes benefiting 11,963 farmers,
  - \* 59 training programmes benefiting 1117 rural youths
  - \* update their knowledge in frontier areas of technology
  - \* Fourteen radio talks, 49 telecast and 88 news-paper coverage were carried out by KVKs.
  - \* 259 frontline demonstration on oilseed crops covering 95 hectares and 91 demonstration on pulse crops covering 30 hectares.
- (e) Efforts are intensified on hybrid research and development in crops like pigeonpea and pearl millet. Accelerated efforts are also on for the development of high yielding varieties with in-built tolerance to biotic and abiotic stresses in crops like wheat, rice, chickpea, pigeonpea, cowpea, mothbean, sorghum, pealmillet, maize, amarnath and minor miller. Befitting improved

varieties, appropriate crop production and protection packages are also being perfected.

SHRI BACHANI LEKHRAJ: Sir, I want to know from the hon. Minister whether the Central Government have received, in the last two or three years, any new technology for accelerating argicultural production, either from the scientists or the research centres in our country or from other countries. If yes, what are the details thereof? I would also like to know from the Minister whether that technology has been transferrd to the State. If yes, what are the details thereof?

श्री सुन्दर लाल पटवा: सभापित महोदय, टेक्नोलॉजी ट्रांसफर का जो मामला हैं यह निरंतर चलता रहता हैं। हम टेक्नोलॉजी आयात भी करते हैं, निर्यात भी कराते हैं। हमारा परस्पर कन्सलटेशन भी होता हैं तथा इस आयात-निर्यात में जो अद्यतन, लेटेस्ट टेक्नोलॉजी उपलब्ध हैं उसके साथ जोड़ने का प्रयास भी चलता रहता हैं। यह पिछले एक वर्ष में भी हुआ हैं, दो वर्ष में भी हुआ हैं, तीन वर्षों में भी हुआ हैं।

SHRI BACHANI LEKHRAJ: Sir, there is one alarming and challenging Report from the World Watch Institute. If we cannot consider that Report, the future of our country would be in gloom. On the one side, there is population explosion but on the other, there is no porortionnate increase in the production of foodgrains. Sir, the Report says, "As India approaches the 21st Century, it will face great challenges to food security and its sustainability which is the backbone of the prosperity of a nation. According to the World Watch Institute Report, 1998, by 2050 A.D. India's population will increase to 1535 million from the present figure of 976 million. The per capita avialability of agricultural land will decrease to less than 0.10 hectares and the storage of water will be accentuated. The Report further warns that the resulting cutback in irrigation could reduce India's agricultural harvest by 25 per cent with a consequential drop in food supplies below the survival level, creating a national food emergency " —It further says — " .... The Ministry of Agriculture, Government of India, has prepared an action plan, which is still to be published, which envisages a total production of 325 million tonnes by 2020. However, our soil resources continue to undergo increasing stresses due to population pressure, loss of vegetative cover, soil degradation, pollution and climatic changes, The vagaries of nature, with floods in one part of the country and drought in the other, and unseasonal and erratic rains, adversely affect crop production. Thus, looking into our resources and targets to be achieved for

crop production, there needs to be a comprehensive policy on development and adoption of low input sustainable agriculture technologies." Considering this Report and the Government's study, which has not been published, I want to know form the Minister that to increase the agricultural production, potentialities in foodgrains, oil seeds, pulses etc., what steps the Government have taken or proposed to take for extensive research in the field of acquiring new technology for the country, more particularly for Gujarat State.

श्री सुन्दर लाल पटवा : श्रीमन् जो प्रश्न पूछा गया हैं, वह केवल गुजरात के किसानों को प्रभावी रूप से टेक्नोलोजी हस्तांरतण करने के लिए है। ....(व्यवधान)...

SHRI BACHANI LEKHRAJ : Sir, I am talking about the second and third line of part (a) of my question.

श्री सुन्दर लाल पटवा: जी हां, मैं देख रहा हूं।

MR. CHAIRAMAN : Let the Minister reply, You are again repeating the same question.

SHRI BACHANI LEKHRAJ: I am sorry, Sir.

श्री सुन्दर लाल पटवा: जो प्रश्न हैं, उसको गुजरात की सीमा में रखा गया हैं। जिस रिपोर्ट का माननीय सदस्य जिक्र कर रहे हैं, वह इस समय मेरे पास उपलब्ध नहीं हैं। परन्तु अगर माननीय सदस्य चाहते हैं विस्तृत रूप से इस प्रश्न का उत्तर चाहते हैं मुझे पत्र लिखें। मैं उनको उत्तर दे कर के समाधान करूंगा। ....(व्यवधान)... चर्चा के लिए भी बुलाऊंगा। जहां तक देश के कृषि उत्पादन के विस्तार का सवाल है, उसको बढ़ाने का सवाल है, उस पर सरकार पूरी तरह से सचेत हैं और जो प्रयास उसके लिए आवश्यक हैं,वह निरंतर हम करते रहे हैं। जो टेक्नोलोजी का ट्रांस्फर हैं, मैंने पहले भी कहा है कि निरंतर चलने वाली प्रक्रिया हैं, हर रोज नया शोध होता हैं, जो कुछ होता हैं, उससे हम वाकिफ रहते हैं।

SHRI BACHANI LEKHRAJ: I would like to know whether the Government has outlined any scheme for conducting study tours for exchanging farmers, either within the country or outside the country, for getting knowledge of new techniques for increasing the agricultural production. I would also like to know whether any financial provision has been made by the Central Government in this regard. If yes; what are the details thereof, and whether the farmers of Gajarat have got any facility. If yes, I would like to know as to how many farmers have received that facility.

विश्वविद्यालय तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों के विस्तार का प्रयास किया गया हैं। इस समय गुजरात में कृषि विज्ञान केन्द्र जो काम कर रहे हैं, उनके माध्यम से नयी आधुनिकतम अद्यतन टेक्नोलोजी को बताने और ट्रायल करने और किसानों को प्रशिक्षित करने का सब काम चालू हैं, जारी है। मानीनय सदस्य उसकी विस्तार से जानकारी चाहते हैं कि कहां-कहां केन्द्र हैं, कहां-कहां प्रशिक्षण केन्द्र बनाए गए, कहां-कहां विस्तार केन्द्र बनाए गए, वह सब इस समय मेरे पास हैं। आप कहें तो मैं पढ़ देता हूं।

श्री सभापति : यह बहुत लम्बा होगा।

श्री सुन्दर लाल पटवा : जी हां। ....(व्यवधान)...

श्री सभापति : इसको टेबल पर रख दीजिए।

श्री सुन्दर लाल पटवा : मैं टेबल पर रखता हूं।

SHRI PRANANB MUKHERJEE: Sir, the hon. Minister, in the course of his reply, has stated that two important institutions, namely, Krishi Vigyan Kendras (KVKs) and Agricultural Universites are actively engaged in transferring technology to the farmers of Gujarat. He has also the detailed information which he has agreed to lay on the Table of the House, about the operation of 10 KVKs. So, I am not putting that question. Sir, one of the problems with which the farmers of Gujarat are confronted is about the peculiar disease which affects their important cash crop groundnut and which has become almost a cycle. Now, I would like to know from the hon. Minister whether either the KVKs or the Agricultural Universities have been able to evolve an appropriate technology to reduce the damage and produce disease-immune groundnut seeds. Has a technology been developed in this regard? Sir, the farmers of Gujarat are crying for this demand.

श्री सुन्दर लाल पटवा: श्रीमान्, जहां तक डिजीज का सवाल है, उसके निराकरण करने का प्रयास जारी हैं। परन्तु आज उसका निराकरण हो गया और उस पर हमने काबू पा लिया हैं, यह कहने की स्थिति में मैं नहीं हूं।

MR. CHAIRAMAN : Mr. Ramachandraiah, but you put a question about Gujarat only.

SHRI C. RAMACHANDRAIAH: I am putting a question about KVKs.

DR. ALLADI P. RAJKUMAR: But, Sir, if we see to part (c) of the question, it appears that this question pertains to other universities also.

MR. CHAIRMAN: That is all right. But put questions about Gujarat only. Let us not enlarge the ambit of it: The question is about Gujarat.

SHRI C. RAMACHANDRAIAH : Sir. during the course of his reply, the Minister has mentioned about the Krishi Vigyan Kendras.

MR. CHAIRMAN: The question is relating to Gujarat, whether it is about universities or anything else. It is not beyond that.

SHRI C. RAMACHANDRAIAH : Are we confining the answers to that level, Sir?

MR. CHAIRMAN: No, no.

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे : सभापति महोदय, जो सवाल पूछा गया हैं वह बिल्कुल क्लिअर हैं और आप ने जवाब दिया हैं कि :

"The Government have intensified programmes on promoition of hybrid technology, popularisation of new varieties of important crops and others and diversification of agriculture."

तो नई टैक्नॉलोजी कौन सी हैं, उसके डिटेल्स तो आपने नहीं दिए है। प्रश्न के भाग "बी" में उन्होने पृछा हैं

"if so. the details thereof;".

वह जवाब आपने नहीं दिया हैं, कोई डिटेल्स नहीं दिए है। इसलिए सभापित महोदय मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि उनके डिटेल्स क्या हैं? प्रश्न के भाग "ए"में जो सवाल पूछा गया हैं, उनकी डिटेल्स बता दें।

श्री सुन्दर लाल पटवाः श्रीमान्, मैंने पहले भी कहा, टैक्नॉलोजी ट्रासंफर निरंतर चलने वाली प्रक्रिया हैं। मेरी एक और प्रार्थना है कि यह कृषि राज्य का विषय हैं और राज्य का विषय होने के कारण केन्द्र की भूमिका सहयोग की हैं, परंतु इम्प्लीमेंटेशन का जितना काम हैं वह राज्य को करना है।

श्री जनेश्वर मिश्र : एसेंबली में जाकर पूछें।

श्री सुन्दर लाल पटवा : एसेंबली में जाने की बात में नहीं कह रहा हूं। यहां मेरे पास जितना उत्तर उपलब्ध हैं, वह मैं नये प्रश्न के भाग "ए" और "बी" के लिए संक्षेप में दिया हैं।

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे: महोदय, इसे स्टेट का सवाल कहकर नहीं टाला जा सकता हैं। महोदय, रूरल डवलपमेंट में भी एग्रीकल्चर शामिल हैं, देश में इसके जितने इंस्टीट्यूट्स हैं वे भी सेंट्रल गवर्नमेंट के नीचे हैं और टैक्नॉलोजी ट्रांसफर से संबंधित यह सवाल हैं कि अपने देश के वैज्ञानिकों ने कितने नए शोध किए और ट्रांसफर किए। आप इतने डिटेल्स दे दीजिए। इसमें कोई स्टेट का सवाल नहीं हैं।

श्री सुन्दर लाल पटवा: सभापित महोदय, टालने का तो प्रश्न ही नहीं हैं। राज्य का विषय होने के बाद भी केन्द्र अपनी जिम्मेदारी से परे नहीं हो जाता। जो हमारी जिम्मेदारी हैं उसे हम राज्य के सहयोग से निर्वाह करते है और उसमें राज्य का पूरा सहयोग रहता हैं। महोदय, गुजरात में गेहूं की फसल के लिए पी.एल. 8033, जी.डब्ल्यू. 190, एच.आई. 1077, एचडी. 2236, मालव शक्ति, राज 1555, डी.एच.आई. 8सी 820—ये सब सिंचित समय पर बुआई की दशाओं में उपयोग में आती हैं। जी.डब्ल्यू. 16 ....(व्यवधान)...

श्री अनन्तराय देवशंकर दवे : मैं नई टैक्नॉलोजी के बारे में जानना चाहता हूं कि नई टैक्नॉलोजी क्या खवलप हुई हैं?

श्री सुन्दर लाल पटवा: महोदय, मैं फिर निवेदन करता हूं कि नई टैक्नॉलोजी महीनों, सालों में एक बार नहीं आती। नई टैक्नॉलोजी हम भी विकसित करते है। हम केवल विदेशों पर निर्भर नहीं हैं। उसका आदान-प्रदान होता हैं। अपनी विकासित की हुई टैक्नॉलोजी हम भेजते हैं और बाहर विकसित की हुई टैक्नॉलोजी हम आयात करते हैं। उसके बाद उसका परीक्षण करते हैं। मारे यहां की परिस्थिति में जो टैक्नॉलोजी उन्होने विकसित की हैं वह ठीक है या नहीं, उस की उपयोगिता हैं या नहीं — इन सब बातों का परीक्षण करते हैं। फिर एक साल के परीक्षण के बाद उसे केन्द्रों पर भेजते हैं। इस तरह यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया हैं। आज आप पूछें कि कल कौनसी टैक्नॉलोजी आपके पास आई हैं, तो यह कहने की स्थिति नहीं हैं। गुजरात के संबंध में माननीय सदस्य जानना चाहें तो मैं वह पूरी जानकारी सदन के पटल पर रखने के लिए तैयार हूं और आप चाहें तो आपको पत्र के द्वारा उत्तर भी भेज सकता हूं।

सभापति जी, इसका विवरण काफी विस्तार से हैं और इसमें प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर देने का प्रयास किया गया हैं।

DR. BIPLAB DASGUPTA: Sir, my friends from Gujarat will agree with me that the technology which the Gujarat farmers want or need is the technology

which is drought-resistant, which needs a very low water intensity and which also is oriented towards subsistence farming. But the point is, how can there be a technology transfer to Gujarat, when most of the technologies that have been developed in the universities are aimed at commercialisation and are away from the subsistence farming? In fact, they are seeking to develop market-oriented technologies and are not interested in drought-resistant crops.

Sir, I understand, the same type of Bill is being discussed in two Committees. While the standing committee on Agriculture is discussing the issue in the form of a Bill, a similar Bill dealing with biological issues and technology is being discussed by the Ministry of Environment. My point is whether these two Bills can be discussed together so that some kind of a coordination can be brought about to emphasis on the need of self-reliance in technology in India. My view is that these two Bills, if taken together, can help a great deal in the technology transfer to farmers in Gujarat. There are common provisions in both the bills. Therefore. 1 would suggest that the two bills be sent to the same Select Committee for proper coordination between the two Ministerics to develop a proper self-reliant technology dealing with specific issues and problems which the farmers in Gujarat are facing now.

श्री सुन्दर लाल पटवा: सभापित महोदय, वैसे तो इसके लिए मुझे अलग से अतिरिक्त प्रश्न का नोटिस चाहिए लेकिन माननीय सदस्य ने जैसा कहा कि कोआर्डिनेशन और समझदारी विभागों के अंदन नहीं हैं, ऐसी बात नहीं हैं। उनको और समझ और जानकारी की आवश्यकता हो सकती हैं, उनकी जानकारी में कमी हो सकती हैं लेकिन विभागों में आपस में समझदारी में कोई कमी नहीं हैं। अगर आप इसके लिए अलग से प्रश्न करें तो मैं उत्तर दूंगा। यह प्रश्न से संबंधित नहीं हैं।

श्री लित भाई मेहता: सभापित जी, मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि टेक्नोलाजी के कारण प्रति हैक्टेयर उत्पादकता बढ़ती हैं। जहां तक चावल का सवाल हैं, आन्ध्र प्रदेश में चावल की उपज प्रति हैक्टेयर एरिया में 2,400 किलोग्राम हो रही हैं लेकिन गुजरात में यह 1,450 किलोग्राम के करीब है। इसी तरह गुजरात में गेहूं की उपज प्रति हेक्टेयर एरिया में करीब 2,200 किलोग्राम हैं लेकिन पंजाब और हरियाणा में यह 3,600 से 3,900 किलोग्राम हैं। तो क्या गुजरात में ऐसी टेक्नोलोजी नहीं अपनाई जा रही है जिससे कि पंजाब और हरियाणा में गेहूं और आन्ध्र प्रदेश में चावल की कितनी उत्पादकता हैं, उतनी वहां भी हो सके?

सभापित महोदय,मैं मंत्री महोदय से यह भी कहना चाहूंगा कि 8वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान गुजरात में सिंचाई योजनाओं के लिए जो आयोजन किया गया था, वह एरिया की दृष्टि से 6,28,000 हैक्टेयर के लिए किया गया था लेकिन एचीवमेंट 1,39,00 हैक्टेयर का हुआ और इसके लिए जो आऊटले था, वह 28,003 करोड़ रूपये का था। तो मैं यह जानना चाहता हूं कि 8वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 28,003 करोड़ रूपये में से कितने रूपये बड़ी, मध्यम और माईनर इरिगेशन स्कीम्स पर खर्च किए गए?

श्री सुन्दर लाल पटवा : श्रीमन्, 8वीं पंचवर्षीय योजना का आऊटले, उसकी उपयोगिता और उससे होने वाला लाभ, इसके बारे में माननीय सदस्य अलग से प्रश्न पूछें तो मै उसका उत्तर दें सकूंगा। जहां तक उत्पादकता का सवाल हैं, माननीय सदस्य ने पंजाब, आन्ध्र प्रदेश और गुजरात की तुलना की हैं। हम जमीन नहीं बदल सकते हैं, हम पानी की उपलब्धता नहीं बदल सकते हैं, हम जलवायु की उत्पादकता नहीं बदली सकते हैं। वह तो जहां जैसी स्थिति हैं उसके अनुसार अधिकतम प्रयास करके जो उत्पादकता बढ़ाई जा सकती हैं उसका प्रयास किया जाता हैं। यह कोई मार्केट को ध्यान में रखकर नहीं किया जाता हैं। इस कार्य में किसानों का ध्यान न रखना या जमीन का ध्यान न रखना, ऐसी कोई स्थिति नहीं हैं। हमारे कृषि विज्ञान केन्द्र हैं, कृषि विश्वविद्यालय है , विभाग हैं, केन्द्र का हैं, राज्य का हैं। यह सब मिलकर के इस प्रयास में हैं कि हम अधिकतम उत्पादकता का प्रयास करें। जमीन की जो फर्टीलिटी है उसको बनाकर रखना ही बहुत महत्वपूर्ण है।

SHRI S. B. CHAVAN: Mr. Chairman, Sir, the hon. Minister has been insisting and saying the same things over and over again that research is a continuous process and there is exchange of ideas, there is exchange of technologies and we import and export technologies. In this context, I would like to say one thing. Sir, the Gujarat University has developed a number of varieties. They are well-known for evolving certain technologies which ultimately resulted in greater agricultural production. Is the hon. Minister in a . position to inform us as to how many major technologies have been developed by them during the last three years? How many technologies have been experimented through the KVKs by them during the last three years? Have they come to the conclusion that a technology developed by them is commercially viable and it can be adopted by the agriculturists? If such a position is there, according to my information, if any technology is evolved by way of research and the research is successful, it takes a considerable time for making it commercially operative. Are there any such schemes which have been looked into by the Government of India, especially the ICAR? The ICAR would have immediately picked it up. The House would be interested to know this thing from the hon. Minister. In view of the fact that we are laying a lot of emphasis on agricultural production during the Ninth Plan, and also the subsequent Plan,

will the hon. Minister let us know whether such a technology is immediately available?

श्री सुन्दर लाल पटवा :सभापित जी, माननीय सदस्य ने जो प्रश्न किया हैं उसमें कई बातें पूछी हैं। पिछले तीन साल की टेकनालॉजी के बारे में, फिर लेटेस्ट टेक्नोलॉजी के बारे में, दो-तीन बातों के बारे में उन्होने जानकारी चाही हैं। मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य से प्रार्थना करना चाहता हूं कि जो टेकनालॉजी के विकास में और ट्रासंफर में निरन्तरता हैं उसमें किसी एक कार्य को किसी एक मुकाम पर ठहर करके कहा नहीं जा सकता है कि आज यह टेक्नालॉजी ट्रासंफर करके हमने लागू करने का प्रयास किया हैं और यही सर्वोत्तम है। इसमें कुछ समय बाद दोप प्रतीत होते हैं और फिर नई टेक्नालॉजी आती है। ....(व्यवधान)...

श्री शंकरराव चव्हाण : आपके पास कुछ तो रिजल्ट होंगे, कुछ तो जानकारियां होगीं? आप कुछ तो रिजल्ट बताइये? सारी चीज के लिए आप इवेजिव रिप्लाई देते आ रहे है।

श्री सुन्दर लाल पटवा: सभापित महोदय, मैं आपके माध्यम से चव्हाण साहब से प्रार्थना करना चाहता हूं कि आप विरष्ठ सदस्य हैं। पिछले तीन साल में क्या प्रगित हुई हैं इस बात की जानकारी अगर आप मुझसे चाहते हैं तो इस गुजरात के प्रश्न से संबंधित जो जानकारी मेरे पास हैं उतनी मैं आपको उपलब्ध करवा सकता हूं। यदि आप विस्तार से जानकारी चाहते हैं.....

श्री सभापति : नहीं, वह गुजरात की युनिवर्सिटी की ही जानकारी चाहते हैं और कुछ नहीं चाहते हैं।

DR. BIPLAB DASGUPTA: Sir, it seems that the Minister has not applied his mind to this question. That is why the answers given to all questions by him were evasive and superficial. He has not given any thought to the whole question of rural technology. So, I would suggest that instead of wasting the time of the House on this question, let us proceed to the next question because he is not giving any answer to us. Let us not put any more questions to him.

MR. CHAIRMAN: All right. We go to the next question.

खतरनाक उद्योगों में कार्यरत बाल मजदूर \*542. श्री रमा शंकर कौशिक : प्रो. रामगोपाल यादव :

क्या श्रम मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

†सभा में यह प्रश्न श्री रमा शंकर कौशिक द्वारा पुछा गया।